IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.53
Volume 4, Issue 2, January 2024

राजगढ़ जिले के माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की सृजनात्मकता पर बुद्धि, आत्म संकल्पना व समायोजन केप्रभाव का अध्ययन

सहायक प्रो. श्रीमती पल्लवी नागर और स्वाति यादव

अरिहंत कॉलेज, इन्दौर

सारांश

शिक्षा को मानव जीवन का आधार स्तम्भ माना जाता है। शिक्षा के अभाव में मानव जीवन के विकास की कल्पना ही नहीं की जा सकती है। यह मानव जीवन की उत्कृष्टता एवं उच्चता को सुनिश्चित करती है। प्राचीन काल में शिक्षा का समाज के कार्यों एवं उद्देश्यों के अनुसार आत्मज्ञान एवं आत्म प्रकाश का साधन माना गया है। थोड़े में यह कहा जा सकता है कि शिक्षा मनुष्य के जीवन को सार्थक बनाती है। प्रस्तुत शोध में राजगढ़ जिले के माध्यमिक स्तर के

विद्यार्थियों कीसृजनात्मकता पर बुद्धि, आत्म संकल्पना व समायोजन केप्रभाव का अध्ययन किया गया। कक्षा 8 के विद्यार्थियो की सृजनात्मकता पर बुद्धि, आत्मसंकल्पना एंव उनकी अंतर्क्रिया के प्रभाव का अध्ययन का सांख्यिकी गणना द्वारा परिणाम प्राप्त किए गए है। गणना के आधार पर यह ज्ञात हुआ है कि विद्यार्थियो की सृजनात्मकता पर बुद्धि, आत्मसंकल्पना एंव उनकी अंतर्क्रिया में कोई सार्थक अंतर नही है।

1.0. प्रस्तावना :

मानव जीवन प्रक्रिया विविध प्रकार के वातावरण में होकर निकलती है शिक्षा उसको वातावरण के साथ अनुकूल करने की क्षमता प्रदान करती है, साथ ही वातावरण में अपनी सुविधानुसार परिवर्तन करने की शक्ति और ज्ञान प्रदान करती है। शिक्षा समाज की उन्नति के लिए एक महत्वपूर्ण साधन है। शिक्षक को भी सृजनशील माना जा सकता है, क्योंकि प्रकृति प्रदत्त मूल प्रवृत्ति जन्य व्यवहारों को परिमार्जित कर उन्हें सामाजिकता का आधार प्रदत करता है। सृजनात्मक व सृजनशीलता एक प्रकार के चिन्तन का तरीका है।बुद्धि के सहारे ही व्यक्ति किसी समस्या के समाधान तक पहुँचता या पहुँचने का प्रयास करता है। बचपन और किशोरावस्था के दौरान हमारी आत्म–अवधारणा सबसे तेजी से विकसित होती है, लेकिन आत्म–अवधारणा समय के साथ बदलती और बदलती रहती है क्योंकि हम अपने बारे में और अधिक सीखते हैं। बचपन और किशोरावस्था के दौरान हमारी आत्म–अवधारणा सबसे तेजी से विकसित होती है, लेकिन आत्म–अवधारणा समय के साथ बदलती और बदलती रहती है क्योंकि हम अपने बारे में और अधिक सीखते हैं। बचपन और किशोरावस्था के दौरान हमारी आत्म–अवधारणा सबसे तेजी से विकसित होती है, लेकिन आत्म–अवधारणा समय के साथ बदलती रहती है क्योंकि हम अपने बारे में और अधिक सीखते हैं।

2.0.उद्देश्य :

1. विद्यार्थियो की सृजनात्मकता पर बुद्धि, आत्मसंकल्पना एंव उनकी अंतर्क्रिया के प्रभाव का अध्ययन करना।
2. विद्यार्थियो की सृजनात्मकता पर बुद्धि, समायोजन एंव उनकी अंतर्क्रिया के प्रभाव का अध्ययन करना।
3. विद्यार्थियो की सृजनात्मकता पर आत्मसंकल्पना, समायोजन एंव उनकी अंतर्क्रिया के प्रभाव का अध्ययन करना।

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.53
Volume 4, Issue 2, January 2024

2.1 परिकल्पना :

1. विद्यार्थियो की सृजनात्मकता पर बुद्धि, आत्मसंकल्पना एंव उनकी अंतर्क्रिया में कोई सार्थक अंतर नही होगा।
2. विद्यार्थियो की सृजनात्मकता पर बुद्धि, समायोजन एंव उनकी अंतर्क्रिया में कोई सार्थक अंतर नही होगा।
3. विद्यार्थियो की सृजनात्मकता पर आत्मसंकल्पना, समायोजन एंव उनकी अंतर्क्रिया में कोई सार्थक अंतर नही होगा।

2.2 परिसीमा :

अध्ययन हेतु राजगढ़ जिले के 2 शासकीय और 2 अशासकीय विद्यालय का चयन किया गया तथा यह शोध कार्य 2 शासकीय और 2 अशासकीय विद्यालय तक ही सीमित रहेगा। शोध कार्य में माध्यमिक स्तर के कक्षा – 8 के विद्यार्थियो को ही लिया गया है।

3.0 न्यादर्श

माध्यमिक स्तर के कक्षा – 8 के शासकीय व अशासकीय विद्यालय के छात्रों को लिया गया।

क्रं	स्कुल	संख्या
1	सरस्वती शिशु मंदिर, बखतपुरा	20
2	मॉ शारदा कान्वेन्ट स्कूल, खानपुरा	22
3	शा. माध्यमिक विद्यालय चाठा	36
4	शा. माध्यमिक विद्यालय कोलुखेड़ी	27

तालिका 3.1

3.1.शोध का प्रकार :–

सर्वेक्षणात्मक।

3.2.शोध प्रविधि :–

प्रस्तुत शोध की प्रविधि सर्वेक्षण है। अतः इस शोध कार्य में सर्वेक्षण विधि द्वारा प्रदत्तों का संकलन किया जायेगा।

3.3.उपकरण :–

प्रस्तुत शोध में ऑकडों के संकलन हेतु निम्नलिखित उपकरणों का प्रयोग किया गया है।

सृजनात्मकता :–

प्रमापीकृत उपकरण डॉ. रोमा पल द्वारा निर्मित

बुद्धि :–

प्रमापीकृत उपकरण डॉ. रोमा पल द्वारा निर्मित

आत्मसंकल्पना :–

प्रमापीकृत उपकरण डॉ. राजकुमार सारस्वत द्वारा निर्मित

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.53
Volume 4, Issue 2, January 2024

समायोजन :–

प्रमापीकृत उपकरण R.P. Singh (पटना) व A.K.P. sinha (राजपुर) द्वारा निर्मित।

3.4.प्रदत्त संकलन विधि :

प्रदत्त संकलन के लिए संबंधित स्कूलों के प्राचार्य से पूर्व निर्धारित समय लेकर बच्चों से टेस्ट लिए गये। बच्चों को सृजनात्मकता, बुद्धि, आत्मसंकल्पना व समायोजन का परिक्षण पत्र दिया गया जिससे बच्चों द्वारा भरवाकर प्राप्त संकलन का कार्य पूर्ण किया गया।

3.5.प्रदत्त विश्लेषण :

प्रदत्तों का विश्लेषणTwo way anova Test के माध्यम से किया गया।

4.0 विश्लेषण

1. विद्यार्थियो की सृजनात्मकता पर बुद्धि, आत्मसंकल्पना एंव उनकी अंतर्किया के प्रभाव का अध्ययन करना।

Test of Between -Subjects Effects

Dependent Variable : Creativity

Source	Type III Sum of Squares	df	Mean Square	F	Sig.
Corrected Model	437.034[a]	3	145.678	1.731	.165
Intercept	47719.270	1	47719.270	567.103	.000
Intelligence	153.141	1	153.141	1.820	.180
Self Concept	92.252	1	92.52	1.096	.297
Intelligence* Self Concept	183.332	1	183.332	2.179	.143
Error	8751.151	104	84.146		
Total	57406.000	108			
Corrected Total	9188.185	107			

a. R Squared =.048 (Adjusted R Squared=.020)

4.1.परिणाम –

तालिका क्रमांक 4.1 से स्पष्ट है, कि बुद्विलब्धि के लिए F का मान 1.820 है एवं स्वतंत्रता के अंश (1.104) पर सार्थकता मान .180 है जो सार्थकता के स्तर 0.05 से अधिक है अतः सार्थकता के 0.05 स्तर पर सार्थक नही है। अतः शून्य परिकल्पना –" उच्च एंव निम्न बुद्विलब्धि के विद्यार्थियों के सृजनात्मकता के माध्य फलांको में सार्थक अंतर नही है।" निरस्त नही की जाती है।

आगे तालिका 4.1 से स्पष्ट है, कि आत्मसंकल्पना के लिए F का मान 1.096 है। स्वतंत्रता के अंश (1.104) पर सार्थकता मान .294 है जो सार्थकता के स्तर 0.05 से अधिक है अतः सार्थकता के 0.05 स्तर पर सार्थक नही है। अतः शून्य

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.53
Volume 4, Issue 2, January 2024

परिकल्पना –" उच्च एंव निम्न आत्मसंकल्पनाा के विद्यार्थियों की सृजनात्मकता के माध्य फलांको में सार्थक अंतर नही है।"- निरस्त नही की जाती है।

पुनः तालिका 4.1 के अवलोकन से स्पष्ट है, कि बुद्विलब्धि एंव आत्मसंकल्पना की अंतर्क्रिया के लिए F का मान 2.179 है, स्वतंत्रता के अंश (1.104) पर सार्थकता मान .143 है जो सार्थकता के स्तर 0.05 से अधिक है, अतः सार्थकता के 0.05 स्तर पर सार्थक नही है। अतः शून्य परिकल्पना –" बुद्विलब्धि, आत्मसंकल्पना एंव उनकी अंतर्क्रिया का विद्यार्थियों की सृजनात्मकता पर सार्थक प्रभाव नही है।" निरस्त नही की जाती है।

5.0 शोध निष्कर्षः–

- उच्च एंव निम्न बुद्विलब्धि के विद्यार्थियों की सृजनात्मकता के माध्य फलांको में सार्थक अंतर नही है।
- उच्च एंव निम्न आत्मसंकल्पनाा के विद्यार्थियों की सृजनात्मकता के माध्य फलांको में सार्थक अंतर नही है।
- बुद्विलब्धि, आत्मसंकल्पना एंव उनकी अंतर्क्रिया का विद्यार्थियों की सृजनात्मकता पर सार्थक प्रभाव नही है।

5.1 भावी शोध हेतु सुझाव :

प्रस्तुत अध्ययन की कोई भौगोलिक सीमा नही है, भावी शोध को क्षेत्र स्तर या राज्य स्तर पर किया जा सकता हैं। प्रस्तुत अध्ययन में M.P.बोर्ड का अध्ययन किया गया है। भावी शोध में C.B.S.E बोर्ड़ व I.C.S.E. बोर्ड़ भी ले सकते है। प्रस्तुत शोध अध्ययन में 500 विद्यार्थियों को ही शामिल किया गया है। अतः भविष्य में न्यादर्श की संख्या को आवश्यकतानुसार बढ़ाया या घटाया जा सकता है।

शोधकार्य भविष्य में केन्द्रीय विद्यालय तथा नवोदय विद्यालय के विद्यार्थियों पर तुलनात्मक रूप से किया जा सकता है।

शोध कार्य भविष्य में प्रयोग प्राथमिक तथा उच्च माध्यमिक स्तर कें बच्चें पर भी किया जा सकता है।

संदर्भ :–

[1]. Mishra Rakesh kumar (2002) :- "A study of the pupil Teachers, their teachingAttitudeAnd the effect of their efficiency' unpublished Ph.D. Purvanchal University Janupur.

[2]. अग्रवाल, सुभाष चन्द्र (2002). अनुसूचित जाति, पिछड़ी जाति एवं सामान्य जाति केछात्रों के समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन। भारतीय शिक्षा शोध पत्रिका, लखनऊ, वॉल्यूम : 21, अंक : 1।

[3]. सिंह एवं कुमार (2009) "कॉन्वेंट स्कूल (अंग्रेजी माध्यम) व सरस्वती स्कूल (हिन्दी कॉन्वेंट स्कूल (अंग्रेजी माध्यम) व सरस्वती स्कूल (हिन्दी माध्यम) के शिक्षकों पर उनकी भावात्मक बुद्धि" जर्नल ऑफ एजुकेशनल रिसर्च एण्ड एक्सटेंशन, 43 (1)।

[4]. श्रीकला, (2010) ने, श्रीकला, (2010) ने, ''इमोशनल इंटेलिजेन्स ऑफ टीचर एज्यूकेचर्स ''इमोशनल इंटेलिजेन्स ऑफ टीचर एज्यूकेचर्स'' जर्नल ऑफ '' एजुकेशनल रिसर्च एण्ड एक्सटेंशन, 43 (1)।

[5]. स्वरूप, डा. एम. रतना (2015). इण्टरमीडियट स्तर के विद्यार्थियों के घर समायोजन का शैक्षणिक उपलब्धि पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन। ई–एजुकेशन वॉल्युम नम्बर 6, इश्य –2।